समास

प्रस्तुतकर्ता डॉ.सुनील बहल
स्टेट रिसोर्स पर्सन
(हिंदी और पंजाबी)

गंगा का जल

महान है आत्मा जिसकी

उपर्युक्त पदों 'गंगा का जल' को 'गंगा जल' तथा 'महान है आत्मा जिसकी' को 'महात्मा' के रूप में संक्षेप में लिख सकते हैं। इसी संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास'शब्द संस्कृत की अस् धातु में सम उपसर्ग के मेल से बना है। इसका अर्थ है समाहार या मिलाप । अत: समास की परिभाषा इस तरह होगी–

परिभाषा– परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जब कोई नया सार्थक शब्द बनता है तो उस मेल को 'समास' कहते हैं। जैसे–

राजा का कुमार = राजकुमार।

समस्त पद तथा विग्रह– समास करने के उपरान्त जो शब्द बनता है उसे 'समस्त पद' कहते हैं। इसे'सामासिक' या 'समस्त शब्द'भी कहते हैं। समस्त पद को इसके शब्द खण्डों में अलग–अलग करने की विधि को 'विग्रह' कहते हैं। जैसे–

हवन सामग्री = हवन के लिए सामग्री

(समस्त पद) **(विग्रह)**

समास के पद– समस्त पद के दो पद होते हैं– पूर्व पद और उत्तर पद। पहले पद को पूर्व पद तथा पिछले पद को उत्तर पद कहते हैं। जैसे –

हवन सामग्री

पूर्व पद **उत्तर पद**

समास के भेद

किसी समस्त पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए इसके पद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसा करने के लिए समस्त पदों में कभी पूर्व पद तथा कभी उत्तर पद प्रधान होता है। कभी–कभी पूर्वपद तथा उत्तर पद दोनों ही प्रधान होते हैं, तो कभी दोनों को छोड़कर कोई अन्य पद प्रधान होता है। पदों की प्रधानता के आधार पर ही समास के भेद किए जा सकते हैं–

1. **अव्ययीभाव समास**
2. **तत्पुरुष समास**
3. **द्वंद्व समास**
4. **बहुब्रीहि समास**

(1) अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो तथा उसके मेल से पूर्ण समस्त पद अव्यय (क्रिया विशेषण) का काम करे, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे–

शब्द	विग्रह	जिस अर्थ में यहाँ अव्यय प्रयुक्त हुआ है
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	'यथा' का प्रयोग 'अनुसार' के अर्थ में हुआ है।

यथाविधि	विधि के अनुसार	'यथा' का प्रयोग'अनुसार' के अर्थ में हुआ है।
यथोचित	जितना उचित हो	'यथा' का प्रयोग'जितना' के अर्थ में हुआ है।
प्रतिदिन	दिन-दिन	'प्रति' का प्रयोग एक के बाद अगले दिन के लिए हुआ है।
आजीवन	जीवन तक	'आ' का प्रयोग 'तक' के अर्थ में हुआ है।
आजन्म	जन्म से लेकर	'आ' का प्रयोग 'लेकर' के अर्थ में हुआ है।
अध्यात्म	आत्मा में	'अधि' का प्रयोग सप्तमी 'विभक्ति' के अर्थ में हुआ है ।
अनुरूप	रूप के योग्य	'अनु' का प्रयोग 'के योग्य' अर्थ में हुआ है।
बेखटक	खटके के बिना	'बे' का प्रयोग 'के बिना' अर्थ में हुआ है।

अन्य उदाहरण

शब्द	**विग्रह**	**शब्द**	**विग्रह**
यथानियम	नियम के अनुसार	प्रत्येक	एक-एक
यथाकाल	काल के अनुसार	प्रतिवर्ष	वर्ष-वर्ष
यथारुचि	रुचि के अनुसार	आमरण	मरण तक
यथाक्रम	क्रम के अनुसार	अधिदेव	देवता में
प्रति सप्ताह	सप्ताह-सप्ताह	बेनाम	नाम के बिना
प्रतिमास	मास-मास	बेरोज़गार	रोज़गार के बिना

अव्ययीभाव समास के रूप– अव्ययीभाव समास निम्नलिखित रूपों में होता है। जैसे-

(i)कई बार शब्दों की आवृत्ति (ध्वन्यात्मकता) के बाद अव्ययीभाव समास का प्रयोग होता है। जैसे-

शब्द	**विग्रह**
दिनोंदिन	कुछ ही दिन में या दिनों के बीतने के साथ-साथ
बीचों बीच	बीच ही बीच में
हाथों हाथ	हाथ ही हाथ में

(ii) पुनरुक्ति होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

शब्द	**विग्रह**	**शब्द**	**विग्रह**
गली-गली	प्रत्येक गली	द्वार-द्वार	प्रत्येक द्वार
साफ-साफ	बिल्कुल साफ(स्पष्ट)	जल्दी-जल्दी	जल्दी ही

(iii)कभी कभी निरर्थक पदों के प्रयोग में भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

शब्द	**विग्रह**	**शब्द**	**विग्रह**
रोटी-वोटी	रोटी आदि	कागज़-वागज़	कागज़ आदि
पानी-वानी	पानी आदि	चाय-वाय	चाय आदि

(2) तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष कहते हैं। ऐसे समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है। समास में दोनों पदों के बीच में आने वाले परसर्गों का लोप हो जाता है। जैसे-

शब्द	विग्रह
क्रीड़ा– क्षेत्र	क्रीड़ के लिए क्षेत्र
विशेषण विशेष्य	

यहाँ 'क्षेत्र' पद प्रधान है तथा 'क्रीड़ा' गौण। दोनों पदों के बीच आने वाला परसर्ग 'के लिए 'का लोप हो गया है।

तत्पुरुष समास के भेद –

(क) परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद – परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष के छः भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष – इसमें कर्म कारक के परसर्ग 'को' का लोप हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
विदेशगत	विदेश को गया हुआ	यश प्राप्त	यश को प्राप्त
परलोक गमन	परलोक को गमन	मोक्ष प्राप्त	मोक्ष को प्राप्त

(ii) करण तत्पुरुष – इसमें करण कारक के परसर्ग 'से' का लोप हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
हस्तलिखित	हस्त से लिखित	मोह ग्रस्त	मोह से ग्रस्त
रेखांकित	रेखा से अंकित	भीड़ भरा	भीड़ से भरा

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष – इसमें सम्प्रदान कारक के परसर्ग 'के लिए' का लोप हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह	धर्मशाला	धर्म के लिए शाला
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
रसोई घर	रसोई के लिए घर	राहखर्च	राह के लिए खर्च

(iv) अपादान तत्पुरुष – इसमें अपादान कारक के परसर्ग 'से' का लोप हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
जन्मांध	जन्म से अंधा	मार्गभ्रष्ट	मार्ग से भ्रष्ट (भटका)
धर्मपतित	धर्म से पतित	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
धनहीन	धन से हीन	देश निकाला	देश से निकाला
भयभीत	भय से भीत (डरा हुआ)	पदच्युत	पद से च्युत (हटाया गया)

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष – इसमें सम्बन्ध कारक के परसर्ग 'का, के, की' आदि का लोप होता है। जैसे

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
सेनापति	सेना का पति	देशवासी	देश का वासी
राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति	राजकुमार	राजा का कुमार
मधुमक्खी	मधु की मक्खी	घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़

(vi) अधिकरण तत्पुरुष – इसमें अधिकरण कारक के परसर्ग 'में', 'पर' आदि का लोप हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
सिरदर्द	सिर में दर्द	नीति निपुण	नीति में निपुण
गृह प्रवेश	गृह में प्रवेश	घुड़सवार	घोड़े पर सवार

ध्यान मग्न	ध्यान में मग्न	आप बीती	आप पर बीती

अन्य उदाहरण– तत्पुरुष समास के कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं। ये किस प्रकार के तत्पुरुष हैं? कारक चिह्न की पहचान कर स्वयं जानने का प्रयत्न करें।

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
गृहागत	गृह को आगत	गौशाला	गौ के लिए शाला
स्वर्गगत	स्वर्ग को गत	पथ भष्ट	पथ से भ्रष्ट
बाढ़ पीड़ित	बाढ़ से पीड़ित	धर्म विमुख	धर्म से विमुख
ज्ञानयुक्त	ज्ञान से युक्त	रामभक्ति	राम की भक्ति
विद्यालय	विद्या के लिए आलय	उद्योगपति	उद्योग का पति
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	विद्या प्रवीण	विद्या में प्रवीण
गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा	धर्म वीर	धर्म मे वीर
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम	रणकौशल	रण में कौशल

(ख) पदों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद– पदों की प्रधानता अर्थात उनके आपसी संबंध के आधार पर तत्पुरुष समास के पाँच भेद हैं–

1. **कर्मधारय तत्पुरुष**
2. **द्विगु समास**
3. **नञ् तत्पुरुष**
4. **अलुक् तत्पुरुष**
5. **मध्यम पद लोपी तत्पुरुष**

(1) कर्मधारय तत्पुरुष– जिस समास के दोनों पदों में 'विशेषण–विशेष्य' अथवा 'उपमान–उपमेय' का संबंध प्रकट हो, उसे 'कर्मधारय समास' कहते हैं।

(क) विशेषण–विशेष्य संबंध–

विशेषण–जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट हो उसे विशेषण कहते है। जैसे– 'नील कमल' इस शब्द में 'नील' शब्द विशेषण है जो 'कमल' (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है।

विशेष्य– जिसकी विशेषता बताई जाए, उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे 'नील कमल' शब्द में 'नील' शब्द द्वारा 'कमल' की विशेषता बताई जा रही है। अतः 'कमल' यहाँ विशेष्य है। विशेषण–विशेष्य संबंध को समझने के लिए इसी तरह के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
पीताम्बर	पीत (पीला) है जो अम्बर (कपड़ा)	पीत (विशेषण) अम्बर (विशेष्य)
महादेव	महान है जो देव	महान (विशेषण) देव (विशेष्य)
नीलगगन	नील (नीला) है जो गगन	नील (विशेषण) गगन (विशेष्य)
परमानंद	परम है जो आनंद	परम (विशेषण) आनंद (विशेष्य)

अन्य उदाहरण

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
नीलाम्बर	नीला है जो अम्बर	कृष्णसप	कृष्ण (काला) है जा सर्प
लाल मिर्च	लाल है जो मिर्च	लाल रूमाल	लाल है जो रूमाल
भलामानस	भला है जो मानस	महाजन	महान है जो जन (आदमी)

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता कि समस्त पद में प्रायः विशेषण पहले तथा विशेष्य बाद में लिखा जाता है, किन्तु कई बार विशेष्य पहले तथा विशेषण बाद में भी प्रयुक्त होता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
सर्वोत्तम	सर्व (सब) में से है जो उत्तम	सर्व (विशेष्य) उत्तम (विशेषण)
पुरुषोत्तम	उत्तम है जो पुरुष	पुरुष (विशेष्य) उत्तम (विशेषण)
गुरुवर	गुरु (श्रेष्ठ) है जो वर	गुरु (विशेष्य) वर (विशेषण)
कविवर	कवि है जो वर (श्रेष्ठ)	कवि (विशेष्य) वर (विशेषण)

(ख) उपमान–उपमेय का सम्बन्ध

_____वह वस्तु या व्यक्ति जिससे समता की जाती है,उसे **'उपमान'** कहते हैं तथा वह वस्तु या व्यक्ति जिसकी समता की जाए, उसे **'उपमेय'** कहते हैं।जैसे–

कमल मुख। इसमें मुख की समता कमल से की गई है। अतः 'मुख' उपमेय तथा 'कमल' उपमान है। उपमान–उपमेय संबंध को समझने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं–

उदाहरण

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
घनश्याम	घन के समान श्याम	घन (उपमान) श्याम (उपमेय)
कमलनयन	कमल के समान नयन	कमल(उपमान) नयन(उपमेय)
कनकलता	कनक के समान लता	कनक (उपमान) लता (उपमेय)
चन्द्रमुख	चन्द्र के समान मुख	चन्द्र (उपमान) मुख (उपमेय)

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि समस्त पद में प्रायः 'उपमान' पहले तथा उपमेय बाद में लिखा जाता है, किन्तु कभी–कभी कर्मधारय समास में पूर्वपद उपमेय तथा उत्तर पद उपमान भी प्रयोग में आता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
नर सिंह	नर है जो सिंह के समान	नर (उपमेय) सिंह (उपमान)
मुखचन्द्र	मुख है जो चन्द्र के समान	मुख (उपमेय) चन्द्र (उपमान)
चरण कमल	चरण हैं जो कमल के समान	चरण (उपमेय) कमल(उपमान)
ग्रन्थरत्न	ग्रन्थ है जो रत्न के समान	ग्रन्थ (उपमेय) रत्न (उपमान)

अन्य उदाहरण–

शब्द	विग्रह
विद्याधन	विद्या है जो धन के समान
वचनामृत	वचन हैं जो अमृत के समान
कर कमल	कर (हाथ) हैं जो कमल के समान
क्रोधाग्नि	क्रोध है जो अग्नि के समान

(2) द्विगु समास– जिस समास में पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो और उत्तर पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
द्विगु	दो गायों का समूह	समस्त पद में 'द्वि' का प्रयोग 'दा'के अर्थ में हुआ है।
त्रिफला	तीन फलों का समूह	समस्त पद में 'त्रि'का प्रयोग 'तीन'के अर्थ (हरड़, बेहड़ा, आँवला) में हुआ है।

चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	समस्त पद में 'चतुर्'का प्रयोग'चार'के अर्थ में हुआ है।
पंचवटी	पाँच वटों का समूह	समस्त पद में 'पंच'का प्रयोग'पाँच'के अर्थ में हुआ है।
सप्ताह	सात दिनों का समूह	समस्त पद में 'सप्त'का प्रयोग 'सात' के अर्थ में हुआ है।
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समूह	समस्त पद में 'अष्ट'का प्रयोग'आठ'के अर्थ में हुआ है।
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह	समस्त पद में 'नव'का प्रयोग'नौ'के अर्थ में हुआ है।

अन्य उदाहरण–

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
तिरंगा	तीन रंगों का समूह	दोपहर	दो पहरों का समूह
पंजाब	पाँच आबों (नदियों का समूह	चौराहा	चार राहों का समूह
शताब्दी	शत(सौ) अब्दों(वर्षों) का समूह	अठन्नी	आठ आनों का समूह

(3) नञ् ततपुरुष– जिस समास में पूर्व पद निषेधात्मक हो अर्थात् जब 'न' के साथ किसी शब्द का समास होता है, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। इस समास मेंयदि 'न' के बाद कोई व्यंजन हो तो 'न' का 'अ' तथा यदि कोई स्वर हो तो 'न' का 'अन्' हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
अयोग्य	न योग्य	'न'के बाद 'य'व्यंजन होने पर'न' का 'अ' हो गया है।
अभाव	न भाव	'न' के बाद 'भ' व्यंजन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।
अनश्वर	न नश्वर	'न' के बाद 'न' व्यंजन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।
अनीश्वर	न ईश्वर	'न' के बाद 'ई' स्वर होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अनुदार	न उदार	'न' के बाद 'उ' स्वर होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अनिष्ट	न इष्ट	'न' के बाद 'इ' स्वर होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अनाचार	न आचार	'न' के बाद 'आ' स्वर होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अकर्मण्य	न कर्मण्य	'न' के बाद 'क' व्यजंन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।

अपवाद– उपर्युक्त नियम प्राय: संस्कृत के शब्दों में लागू होता है। हिन्दी के कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें यह नियम लागू नहीं होता। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
अनदेखी	न देखी	यहाँ 'न' क बाद 'द' व्यंजन है पर 'न' को 'अन' हुआ है।
अनहोनी	न होनी	यहाँ 'न' के बाद 'ह' व्यंजन है, पर 'न' का 'अन'हुआ है।
अनबन	न बनना	यहाँ 'न' के बाद 'ब' व्यंजन है, पर न का 'अन' हुआ है।

अन्य उदाहरण

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
अधर्म	न धर्म	अनेक	न एक
अस्थिर	न स्थिर	असंभव	न संभव

(4) अलुक तत्पुरुष– जिस समास में बीच के परसर्ग का लोप नहीं होता,उसे अलुक तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास के कुछ समस्त पद ऐसे हैं जो मूल रूप से संस्कृत के हैं और उन्हें हिन्दी में उसी रूप में ग्रहण किया गया है। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
सरसिज	सरसि(सरोवर में)	यहाँ समस्त पद में 'सरसि' में सप्तमी

	ज (उत्पन्न)	विभक्ति अर्थात 'में' परसर्ग का लोप नहीं हुआ है।
वाचस्पति	वाचः (वाणी का) पति	यहाँ समस्त पद मे 'वाचस्' में षष्ठी विभक्ति अर्थात 'का' परसर्ग का लोप नहीं हुआ।
युधिष्ठिर	युधि (युद्ध में) स्थिर	यहाँ समस्त पद में 'युधि'में सप्तमी विभक्ति अर्थात 'में'परसर्ग का लोप नहीं हुआ है।
खेचर	खे (आकाश में) चर (चलने वाला)	यहाँ समस्त पद में 'खे' में सप्तमी विभक्ति, अर्थात 'में' परसर्ग का लोप नहीं हुआ।

(5) मध्यम पद लोपी तत्परुष– जब दोनों पदों के मध्य का संबंध बताने वाला पद लुप्त हो जाता है तो उसे मध्यम पद लोपी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
मालगाड़ी	माल ढोने वाली गाड़ी	दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वाले शब्द'ढोने वाली' लुप्त है।
अश्रुगैस	अश्रु लाने वाली गैस	दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वाले शब्द 'लाने वाली' लुप्त है।
मधुमक्खी	मधु इकट्ठा करने वाली मक्खी	दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वालेद 'इकट्ठा करने वाली शब्द लुप्त हैं।
पनचक्की	पन (पानी) से चलने वाली चक्की	दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वाले शब्द 'से चलने वाली' लुप्त है।

अन्य उदाहरण–

शब्द	विग्रह
दहीबड़ा	दही में डूबा हुआ बड़ा
वनमानुष	वन में रहने वाला मानुष (मनुष्य)
पर्णकुटी	पर्ण (पत्ता) से बनी कुटी
बैलगाड़ी	बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी
रेलगाड़ा	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी

(3) द्वंद्व समास

जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पदों को मिलाने वाले समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है। जैसे–

शब्द	विग्रह	विशेष कथन
माता–पिता	माता और पिता	समस्त पद में 'और' अव्यय का लोप हो गया है, परन्तु संयोजक चिह्न(–) प्रयुक्त हुआ है।
पति–पत्नी	पति और पत्नी	समस्त पद में 'और' अव्यय का लोप हो गया है, परन्तु संयोजक चिह्न(–) प्रयुक्त हुआ है।

अन्य उदाहरण

शब्द	विग्रह	शब्द	विग्रह
सीता–राम	सीता और राम	नर–नारी	नर और नारी
भीम–अर्जुन	भीम और अर्जुन	दाल–भात	दाल और भात
गंगा–यमुना	गंगा और यमुना	अन्न–जल	अन्न और जल
राजा–रानी	राजा और रानी	धूप–दीप	धूप और दीप
जल–थल	जल और थल	सुख–दु:ख	सुख और दु:ख
पाप–पुण्य	पाप और पुण्य	लोभ–मोह	लोभ और मोह
देश–विदेश	देश और विदेश	आचार–व्यवहार	आचार और व्यवहार
पूर्व पश्चिम	पूर्व और पश्चिम	रात–दिन	रात और दिन

(4) बहुव्रीहि समास

जिस समास में कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान हो और जिससे नवीन अर्थ प्रकट हो, वहाँ बहुब्रीहि समास होता है। बहुब्रीहि द्वारा निर्मित समस्तपद विशेषण का कार्य करता है। इस समास में विग्रह करने पर मुख्यत: वाला, वाली, जिसका, जिसके, जिसमें, जिससे आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

1. प्रधानमंत्री ने लाल किले पर **तिरंगा** फहराया।
2. **नीलकंठ** बादलों की गर्जन सुनकर नाचता है।

पहले वाक्य में प्रयुक्त 'तिरंगा'शब्द बहुब्रीहि समास का उदाहरण है। यद्यपि 'तिरंगा' का अर्थ होता है'तीन रंगों वाला' अर्थात् कोई भी वस्तु जिसमें तीन रंग हों, उसे तिरंगा कहेंगे। किन्तु उपर्युक्त वाक्य में 'तिरंगा'शब्द एक विशेष अर्थ अर्थात् भारत के 'राष्ट्रध्वज' का बोध करा रहा है। इस उदाहरण में 'ति'अर्थात् तीन और 'रंगा'दोनों पद गौण हैं तथा प्रधान पद है भारत का 'राष्ट्रध्वज'।

दूसरे वाक्य में 'नील कंठ' शब्द बहुब्रीहि समास का उदाहरण है। यद्यपि 'नील कंठ' का अर्थ होता है–'नीले कंठ वाला' अर्थात् जिसका कंठ नीला हो उसे 'नीलकंठ' कहेंगे। नीलकंठ शब्द भगवान शिव के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है।

किन्तु इस वाक्य में 'नीलकठं' शब्द मोर नामक एक पक्षी जो बादलों को देखकर नाचता है, के लिए प्रयुक्त हुआ है। अत: 'नीलकंठ' में 'नील' तथा 'कंठ' दोनों पद गौण हैं और प्रधान पद है 'मोर' अर्थात् नीला है कंठ जिसका।

अत: स्पष्ट हो जाता है कि बहुब्रीहि समास में प्रधान पद का ज्ञान संदर्भ से ही होता है। इसलिए समास का संदर्भ के अनुरूप विग्रह करके अर्थ ग्रहण करना चाहिए। बहुब्रीहि समास के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं–

उदाहरण

समस्त पद	विग्रह	विशेष अर्थ	विशेष कथन
पीताम्बर	पीत है अम्बर जिसका	श्रीकृष्ण	यहाँ'पीत'एवं 'अम्बर'दोनों पद गौण हैं तथा प्रधान पद है'श्रीकृष्ण'।
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों वाला	पाणिनी का व्याकरण	यहाँ 'अष्ट'एवं 'अध्याय' दोनों पद गौण हैं तथा प्रधान पद है 'पाणिनी

			का व्याकरण।'
गजानन	गज के समान आनन (मुख) वाला	गणेश	यहाँ 'गज' एवं 'आनन' दोनों पद गौण हैं तथा प्रधान पद है'गणेश'।
बारहसिंगा	बारह हैं सीग जिसके	हिरन विशेष	यहाँ 'बारह' तथा 'सींग' दोनों पद गौण हैं तथा प्रधान पद ह 'हिरन विशेष'।
त्रिलोचन	तीन हैं नेत्र जिसके	शिव	यहाँ 'त्रि' एवं 'लोचन'दोनों पद गौण हैं तथा प्रधान पद है 'शिव'।

अन्य उदाहरण –

समस्त पद		**विग्रह नवीन अर्थ**
उदाहरण	उदार है हृदय जिसका	व्यक्ति विशेष
दशानन	दश (दस) हैं आनन (मुख) जिसके	रावण
विषधर	विष को धारण करने वाला	सर्प
मेघनाद	मेघ के समान है नाद जिसका	रावण-पुत्र मेघनाद
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला	श्री कृष्ण
मृगनयनी	मृग जैसे नयन हैं जिसके	स्त्री विशेष
मृत्युंजय	मृत्यु को जीतने वाला	शिव
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला	विष्णु
कुसुमाकर	कुसुमों का खजाना है जो	वसंत
लम्बोदर	लम्बा है उदर (पेट) जिसका	गणेश
पंकज	पंक (कीचड़) में पैदा हो जो	कमल
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें	ऋतु विशेष
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके	विष्णु
महात्मा	महान है आत्मा जिसकी	व्यक्ति विशेष

कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर – कर्मधारय समास में उत्तर पद प्रधान होता है व पूर्वपद तथा उत्तर पद में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय संबंध होता है जबकि बहुब्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान होता है तथा समस्त पद किसी संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य करता है। अत: संदर्भ या वाक्य न दिया गया हो तो समस्त पद का जिस तरह से विग्रह किया जाए, उसी के अनुरूप भेद बताना चाहिए। जैसे-कमल के समान नयन= कमलनयन, यह कर्मधारय का उदाहरण है, इसमें उपमान (कमल) उपमेय (नयन) का संबंध है। लेकिन बहुब्रीहि में ऐसा नहीं होता। समास बहुब्रीहि में 'कमल नयन' का विग्रह इसतरह होगा- कमल के समान नयनों वाला अर्थात् विष्णु। यहाँ 'कमल' और 'नयन' शब्द गौण हैं तथा प्रधान पद है 'विष्णु'। नीचे दिए गए कुछ उदाहरणों से कर्मधारय और बहुब्रीहि समासों में अंतर और भी स्पष्ट हो जाएगा-

अन्य उदाहरण –

शब्द	कर्मधारय का विग्रह	बहुब्रीहि का विग्रह
लम्बोदर	लम्बा है जो उदर	लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश
पीताम्बर	पीत है जो अम्बर	पीत है अम्बर जिसके अर्थात् कृष्ण
महादेव	महान देव	महान देवता है जो अर्थात् शिव

द्विगु और बहुब्रीहि समास में अन्तर – कुछ शब्द द्विगु तथा बहुब्रीहि दोनों समासों के हो सकते हैं। दोनों समासों में अंतर केवल इतना होता है कि द्विगु समास का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा उत्तर पद उसका विशेष्य। किन्तु बहुब्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है तथा समस्त पद किसी संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य करता है। जैसे – तीन फलों का समूह – त्रिफला, यह द्विगु समास का उदाहरण है, इसमें फल विशेष्य है तथा त्रि संख्यावाचक विशेषण है। लेकिन बहुब्रीहि समास का विग्रह इस तरह होगा – (पूर्व पद) तीन हैं फल जिसमें अर्थात् औषधि विशेष। द्विगु और बहुब्रीहि समासों में अंतर स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

अन्य उदाहरण

शब्द	द्विगु का विग्रह	बहुब्रीहि का विग्रह
चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	चार भुजाएं हैं जिसकी अर्थात विष्णु
चतुर्मुख	चार मुखों का समूह	चार हैं मुख जिसके अर्थात् ब्रह्मा
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह	तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शिवजी
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समूह	आठ हैं अध्याय जिसके अर्थात् पाणिनी का व्याकरण
तिरंगा	तीन रंगों का समूह	तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्रध्वज

डॉ.सुनील बहल
स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी और पंजाबी